पाठ 10. पुत्री को पत्र

पाठ का उद्देश्य

प्रस्तुत पाठ पंडित जवाहरलाल नेहरू का पत्र है, जो उन्होंने अपनी पुत्री इंदिरा को लिखा था। इस पाठ का उद्देश्य बच्चों को मिस्र देश के इतिहास की जानकारी देना है।

पाठ का सारांश

इस पत्र में पंडित जवाहरलाल नेहरू जी ने मिस्र देश के बारे में इंदिरा जी को बताया है। उन्होंने बताया है कि बड़े-बड़े मकानों और पुरानी किताबों से मिस्रवासियों के बारे में पता चलता है। स्फिंक्स मूर्ति के चेहरे पर अजीबोगरीब मुसकराहट झलकती है। मिस्र में अब भी पुराने बादशाहों के मकबरे हैं। वहाँ आदमी या जानवर के मृत शरीर पर तेल और मसाले लगा दिए जाते थे जिससे वह सड़ न पाए। बादशाहों को मरने के बाद ममी बना दिया जाता था। वहाँ पर खेतों को सींचने के लिए अच्छी-अच्छी नहरें और झीलें बनाई जाती थीं। मिस्र में भूमध्य सागर में स्थित क्रीट नाम का एक छोटा-सा टापू है। लालची राजा मीदास क्रीट में ही रहता था, जिसकी कहानी प्रसिद्ध है। मीदास की कहानी से पता चलता है कि सोना इतनी अच्छी वस्तु नहीं है, जितनी हम सोचते हैं।

अध्यापन संकेत

पाठ वाचन से पूर्व **पहले पहल** में दिए गए प्रश्न बच्चों से पूछें। पाठ का आदर्श वाचन करें। बच्चों को बताएँ कि स्वतंत्रता संग्राम के दौरान जब नेहरू जी जेल में रहते थे तब वे वहाँ से इंदिरा जी को कई जानकारी परक पत्र लिखा करते थे। यह पत्र उन्हीं में से एक है।

- बच्चों से पूछें, उनके मन में बहुत-सी जिज्ञासाएँ उठती रहती होंगी। इस बारे में अपने कुछ विचार बाँटें।
- विशेषण शब्दों के बारे में समझाएँ।
- बच्चों को लालची राजा मीदास की कहानी सुनाएँ।

डिजिटल (Digital) के माध्यम से पाठ की ई-बुक विद्यार्थियों को दिखाकर पाठ के प्रत्येक अंग का स्पष्टीकरण कीजिए। गतिविधियों की दुनिया से परिचय भी कराइए।